IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 3, Issue 1, March 2020 Impact Factor: 4.819

onk e ukjh Lo:i dk fooj.k

Mk- jhrk flg

vfl0 izksQslj bfrgkl

ifMr jkey[ku "kDy jktdh; ih th dkyst] vkykiqj] vEcsMdjuxj

ritasingh806@gmail.com

lkjka'k

प्रस्तुत शोध–पत्र 'वेदों में नारी स्वरूप' वैदिक वाङ्‌म्य के आधार पर नारी की सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं दार्शनिक स्थिति का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति के मूल स्रोत के रूप में वेद न केवल आध्यात्मिक चिंतन के ग्रंथ हैं, बल्कि वे उस काल की सामाजिक संरचना और मूल्य–व्यवस्था के भी प्रमाणिक दस्तावेज हैं। इस अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि वैदिक काल में नारी को जीवन के विविध क्षेत्रों में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। पत्नी को 'सहधर्मिणी' और 'अर्धांगिनी' के रूप में स्वीकार करना इस बात का सूचक है कि स्त्री–पुरुष संबंध प्रतिस्पर्धा पर नहीं, बल्कि सहयोग और समन्वय पर आधारित थे। शोध में विशेष रूप से ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के मंत्रों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि स्त्रियों को शिक्षा, ब्रह्मचर्य, वेदाध्ययन, यज्ञीय अनुष्ठान तथा सामाजिक निर्णयों में सहभागिता का अधिकार प्राप्त था। ऋग्वेद में उल्लिखित ऋषिकाएँ–अपाला, घोषा, लोपामुद्रा आदि–इस तथ्य का प्रमाण हैं कि स्त्रियाँ मंत्रद्रष्टा और दार्शनिक चिंतन की अधिकारी थीं। अथर्ववेद में कन्या के ब्रह्मचर्य और शिक्षा के उपरांत विवाह की संस्तुति तथा वधू को 'सम्राज्ञी' कहकर संबोधित करना नारी के सम्मान और अधिकारबोध को रेखांकित करता है।

दार्शनिक स्तर पर भी वैदिक साहित्य में नारी को सृजन–शक्ति और ज्ञान की अधिष्ठात्री के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। वृहदारण्यकोपनिषद् में स्त्री–पुरुष की उत्पत्ति और समता का जो विवेचन मिलता है, वह नारी को ब्रह्मविद्या और आध्यात्मिक अनुभूति की समान अधिकारी सिद्ध करता है। देवियों–उषा, अदिति, सरस्वती–के माध्यम से नारी को प्रकाश, शक्ति और विद्या का प्रतीक माना गया है, जो उसके दार्शनिक महत्त्व को और अधिक सुदृढ़ करता है। यद्यपि कुछ वैदिक एवं ब्राह्मण ग्रंथों में पितृ सत्तात्मक संकेतों के उदाहरण भी मिलते हैं, तथापि समग्र वैदिक परिप्रेक्ष्य में नारी की स्थिति सम्मानजनक और सशक्त प्रतीत होती है। यह शोध–पत्र पूर्ववर्ती अध्ययनों और आधुनिक नारीवादी विमर्श के संदर्भ में वैदिक नारी की स्थिति का तुलनात्मक एवं समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। निष्कर्षतः यह अध्ययन इस तथ्य को स्थापित करता है कि समानता, शिक्षा–अधिकार और सामाजिक सहभागिता के सिद्धांत भारतीय परंपरा में प्राचीन काल से ही विद्यमान रहे हैं। इस प्रकार 'वेदों में नारी स्वरूप' का यह अध्ययन न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि समकालीन नारी–विमर्श और सामाजिक पुनर्विचार के लिए भी प्रेरणास्रोत सिद्ध होता है।

dh&oMZ ¼Keywords½

वैदिक नारी स्वरूप,नारी–अधिकार, वैदिक शिक्षा और ब्रह्मचर्य, ऋषिकाएँ और वेदाध्ययन, यज्ञीय परंपरा,स्त्री–पुरुष समता, वैदिक सामाजिक संरचना, प्राचीन भारतीय नारी विमर्श